ऑनलाइन किताबें पढ़ पाएंगे दृष्टिबाधित दिव्यांग

आई.आई.टी. मंडी में प्रशिक्षुओं ने ब्रेल व आधुनिक तकनीक से तैयार की अनूठी मशीन बलिंडल

मंडी, 21 मई (बनित): दृष्टिबाधित दिव्यांगों को पढ़ने के लिए ब्रेल लिपि का सहारा लेना होता है जिसके कारण उन्हें इस लिपि में छपी किताबों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह किताबें महंगी उपलब्ध होने के कारण दिव्यांगों को पढ़ने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं हो पाती है लेकिन अब दृष्टिबाधित दिव्यांग बहुत सी जानकारियां ऑनलाइन ही पढ़ पाएंगे।

आई.आई.टी. मंडी में प्रशिक्षुओं द्वारा ऐसी तकनीक पर काम किया जा रहा है जिसके माध्यम से दृष्टिबाधित दिव्यांग ऑनलाइन किताबें (ई-बुक्स) व अन्य सभी प्रकार की जानकारियां पढ़ पाएंगे। इसके लिए ब्रेल लिपि को आधुनिक तकनीक के साथ इस तरह जोड़ा गया है जिसके माध्यम से कम्प्यूटर से दी जाने वाली कमांड के शब्द मशीन में लगे पैनल में ब्रेल लिपि में उभर जाएंगे जिसके माध्यम से दिव्यांग उन शब्दों को पढ़ पाएंगे। इसमें खास बात यह है कि मशीन को चलाने के लिए विभिन्न कमांड बटन भी ब्रेल लिपि में उपलब्ध करवाएं हुए है जिसके माध्यम से दृष्टिहीन दिव्यांग आसानी से मशीन को चला सकेंगे। इस तकनीक को लोगों के लिए करीब 8000 रुपए में उपलब्ध करवाया जा सकेगा।

मंडी: दृष्टिहीन दिव्यांगों के लिए तैयार की तकनीक बलिंडल को प्रदर्शित करते प्रशिक्षु।

मोबाइल भी कर पाएंगे इस्तेमाल

मशीन में ऐसी तकनीक इस्तेमाल की गई है जिसके माध्यम से दिव्यांग अपने फोन में आने वाले संदेशों को बलिंडल के माध्यम से पढ़ पाएंगे व आसानी से अपने फोन का इस्तेमाल कर पाएंगे। इसके लिए मशीन में पहले से ही फोन कनैक्ट कर दिया जाएगा। फोन की विभिन्न कमांड भी वह इस मशीन के माध्यम से आप्रेट कर पाएंगे। इस प्रोजैक्ट में आई.आई.टी. मंडी के अभिषेक, अथर्वा, किसलेय, यजुरेश, सागर व साई सुब्बा राव काम कर रहे हैं। डा. तुषार व डा. अर्पण गुप्ता व प्रो. अर्पण गुप्ता इस प्रोजैक्ट में मैंटर की भूमिका निभा रहे हैं।

130 प्रशिक्षुओं ने प्रदर्शित किए प्रोजैक्ट

दिन-प्रतिदिन मानव समाज में बढ़ रही विभिन्न चुनौतियों के समाधान विकसित करने में आई.आई.टी. मंडी के विद्यार्थियों द्वारा नई तकनीकों पर काम किया जा रहा है। रविवार को आई.आई.टी. मंडी ओपन हाऊस में बी.टैक द्वितीय वर्ष के 130 प्रशिक्षुओं ने करीब 22 प्रोजैक्ट प्रदर्शित किए। डीप माऊंटेनोल घाटियों के लिए सौर वार्मिंग तंत्र प्रणाली, शेफओमैटिक स्मार्ट ऐप नियंत्रित ऑटोमैटिक फूड मेकिंग मशीन, प्लास्टिक बोतल से निजात पाने के लिए रिमोट बॉटल पिकर व कोल्हर, उत्तम सिंचाई प्रणाली, बंदरों से फसलों को बचाने के लिए यंत्र, स्वचलित कबाड़ डीलर, लाइफ सेविंग बॉट, नेत्रहीन के लिए सहायक यंत्र, रोबोरम, कपड़े धोने वाला उत्पाद, साइन भाषा का आवाज में रूपांतरण व अन्य नए अविष्कारों के बारे में इस दौरान विस्तृत रूप से आई.आई.टी. के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुति दी गई। आई.आई.टी. मंडी के सहायक प्रोफैसर डा. कौस्तव सरकार ने कहा कि यह कार्यक्रम हर वर्ष किया जाता है ताकि बच्चों में रचनात्मकता व नए आइडिया विकसित हों जोकि भविष्य में मानव समाज के लिए लाभदायक सिद्ध हों।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Mon, 22 May 2017
epaper.punjabkesari.in//c/19231015